

# डॉ. मार्क जेनिंग्स, मार्क, व्याख्यान 20, मार्क 12:38-13:36, गरीब विधवा, एस्केटोलॉजिकल प्रवचन

© 2024 मार्क जेनिंग्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स हैं जो मार्क के सुसमाचार पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 20 है, मार्क 12:38-13:36, गरीब विधवा, एस्केटोलॉजिकल प्रवचन।

नमस्ते, आपका फिर से स्वागत है।

आज जब हम मार्क पर काम करना जारी रखेंगे, तो हम अपनी बातचीत और यीशु, विवादास्पद कहानियों, यरूशलेम में धार्मिक नेताओं के साथ उनके द्वारा की गई बातचीत और बहस को समाप्त करने जा रहे हैं। उनमें से सात हो चुके हैं। आज हम अंतिम एपिसोड देखेंगे और फिर मार्क 13 और ओलिवेट प्रवचन में उनकी अधिक ज्ञात लेकिन जटिल शिक्षाओं में से एक पर भी आगे बढ़ेंगे।

इसलिए, हम खुद को याद दिलाना चाहते हैं कि यीशु मंदिर में शिक्षा दे रहे थे। अधिकार के मामलों और शास्त्र की उनकी समझ पर उनसे सवाल पूछे गए। फरीसियों, हेरोदियों और सद्कियों ने उनकी परीक्षा ली।

हमारे पास एक शास्त्री था जिसने वास्तव में उससे सबसे बड़ी आज्ञा के बारे में एक प्रश्न पूछा था, जो एक बहुत ही सौहार्दपूर्ण चर्चा थी। हमने इस बारे में बात की। और फिर हमने पिछली बार यीशु के इस प्रश्न को आगे बढ़ाते हुए, शास्त्रियों से पूछते हुए, लगभग शास्त्रियों को इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए चुनौती देते हुए समाप्त किया कि यह कैसे संभव है कि दाऊद अपने वंशजों के बारे में कह सकता है और उसे प्रभु कह सकता है।

इस प्रश्न का उत्तर देना शास्त्रियों के लिए लगभग एक चुनौती है, जिसका उत्तर हम, मार्क के पाठक के रूप में, जानते हैं कि इस मुद्दे का समाधान कैसे किया जाता है, कि दाऊद के पुत्र को दाऊद द्वारा प्रभु कहा जा सकता है क्योंकि दाऊद का पुत्र परमेश्वर का पुत्र भी है। अब, मैं 38 से 44 तक, यीशु की सार्वजनिक शिक्षा के अंतिम प्रकरण को देखना चाहता हूँ। यहाँ, ध्यान का केंद्र नेताओं और शास्त्रियों की धार्मिक स्थिति है, एक विधवा के विनम्र विश्वास के विपरीत शास्त्रियों के खिलाफ यीशु का विवाद।

तो, आइए 38 से 44 तक देखें और अध्याय 12 को समाप्त करें। और अपने उपदेश में उन्होंने कहा, "शास्त्रियों से सावधान रहो, जो लम्बे वस्त्र पहिने हुए फिरना और बाजारों में नमस्कार सुनना पसन्द करते हैं, और सभाओं में मुख्य आसन और जेवनारों में मुख्य स्थान चाहते हैं, और विधवाओं के घरों को खा जाते हैं, और दिखावे के लिए बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हैं। वे अधिक दण्ड पाएँगे।"

और वह खजाने के सामने बैठ गया और लोगों को दान पेट्टी में पैसे डालते हुए देखने लगा। कई अमीर लोगों ने बड़ी रकम डाली। और एक गरीब विधवा आई और उसने दो छोटे तांबे के सिक्के डाले, जो एक पैसा बनते हैं।

और उसने अपने चेलों को अपने पास बुलाकर उनसे कहा, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, इस गरीब विधवा ने दानपात्र में डालने वाले सभी लोगों से बढ़कर डाला है। क्योंकि सबने अपनी-अपनी बढ़ती में से दान दिया, लेकिन इस विधवा ने अपनी गरीबी में से जो कुछ उसके पास था और जो कुछ उसके पास था, वह सब डाल दिया है।” तुम जानते हो कि यह चेतावनी से शुरू होता है, शास्त्रियों से सावधान रहो।

यह फरीसियों और हेरोदियों के खमीर से सावधान रहने की उनकी चेतावनी के समान है। यीशु अब शिष्यों को शास्त्रियों के घमंड के विरुद्ध चेतावनी देते हैं। और ध्यान दें कि उनका घमंड सामाजिक स्थिति के साथ आने वाली सभी सुविधाओं की उनकी इच्छा में स्पष्ट है।

वे बढ़िया वस्त्र पहनते हैं। वे अपनी शान दिखाना चाहते हैं। वे अपनी प्रशंसा पाना चाहते हैं।

वे सम्मान प्राप्त करना चाहते हैं, महत्वपूर्ण स्थानों पर बैठना चाहते हैं, और इस तरह के सम्मान-अपमान संस्कृति को ध्यान में रखते हैं, जहाँ आप बैठते हैं, वहाँ सम्मान दिया जाता है। मैं गलील के ग्रामीण इलाकों में यीशु की शिक्षाओं के बारे में भी सोचता हूँ, जब वह इन घरों में था, अगर आपको याद हो, और वहाँ बहुत भीड़ थी, और लोग अंदर नहीं जा सकते थे, फिर भी किसी तरह शास्त्री अभी भी बैठे थे और घर में यीशु से सुनने के लिए जगह थी। और इसलिए, यह इस सम्मान के साथ बैठता है।

ध्यान दें कि वह उनके कामों के बारे में क्या कहता है। उन्हें ये अभिवादन पसंद हैं। उन्हें सम्मान के स्थान पर ये बेहतरीन सीटें मिलती हैं, और वे विधवाओं के घरों को खा जाते हैं और दिखावे के लिए लंबी प्रार्थनाएँ करते हैं।

तो जाहिर है कि आपके पास एक तनाव है कि वे सामाजिक सम्मान के इन सभी दिखावे को चाहते हैं लेकिन इतने क्रूर हैं। विधवाओं के घरों को निगलने की यह तस्वीर काफी क्रूर तस्वीर है, खासकर जब आप ध्यान में रखते हैं कि ये शास्त्री थे और कानून में विधवाओं की इन सभी सुरक्षाओं को जगह दी गई है। यह शास्त्री ही थे, अगर कोई था, तो उन्हें शास्त्री ही समझना चाहिए था कि कानून क्या कहता है, उन्हें विधवाओं की रक्षा करनी चाहिए थी, न कि विधवाओं के घरों को निगलना चाहिए था।

दूसरे शब्दों में कहें तो, लाभ नहीं उठा रहे हैं। मुझे लगता है कि यहाँ तस्वीर यह है कि वे विधवाओं की दुर्दशा से लाभ उठा रहे हैं, कि वे शक्तिहीन और वंचित लोगों का शोषण कर रहे हैं। और फिर किसी तरह से इन कार्यों को उचित ठहराते हैं या यह दर्शाने के लिए लंबी प्रार्थनाएँ करते हैं कि वे वास्तव में वही हैं जो परमेश्वर के काम के साथ सबसे अधिक संगत हैं।

और यीशु उन पर और भी बड़ी निंदा की घोषणा करता है। जब हम यरूशलेम में होते हैं तो यहाँ चेतावनी पर ध्यान दें। यीशु की चेतावनियाँ न्याय के दावों के साथ आ रही हैं।

शास्त्रियों से सावधान रहें। उन्हें अधिक निंदा मिलेगी। और यह इस संदर्भ में है कि उन्होंने अभी क्या कहा कि शास्त्रियों को सम्मान से प्यार है, और धन से प्यार है और सामाजिक लाभ से प्यार है।

वह बैठा हुआ है, वह खजाने में है, और वह देख रहा है कि लोग इस पैसे को संभवतः एक बड़े धातु के पात्र में डाल रहे हैं। और मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है क्योंकि अगर यह धातु का पात्र, बक्सा, जार होता, तो यह एक तरह से व्यवस्थित होता, एक सिक्का जो आता, वह अलग-अलग धातुओं में आता और अलग-अलग आकारों में आता, खासकर तीर्थयात्रियों द्वारा अलग-अलग सिक्के लाने के साथ। और बड़ी मात्रा में सिक्के ध्वनि उत्पन्न करते।

आप जिस तरह का सिक्का इस्तेमाल करते हैं, उससे आवाज़ आती है। यह वास्तव में एक अवसर होगा, अगर आप चाहते हैं कि लोग जानें कि आपने कितना दिया है, तो सिक्के की आवाज़ से यह संकेत मिलता है कि यह कितना है। तो, आपके पास यह पात्र है, और आपके पास ये तीर्थयात्री आते हैं, और ये लोग आते हैं, और वे खजाने में बहुत बड़ी मात्रा में दान देते हैं।

बहुत से अमीर लोग बड़ी रकम लगाते हैं। और फिर आती है यह गरीब विधवा। अब, हम पहले ही यीशु को विधवा का ज़िक्र करते हुए सुन चुके हैं, कि कैसे शास्त्री, जो व्यवस्था के विशेषज्ञ हैं, विधवाओं की देखभाल नहीं कर रहे हैं, बल्कि विधवाओं के घरों को खा रहे हैं।

वे विधवाओं से लाभ उठा रहे हैं। और यहाँ एक विधवा आती है जो दो सिक्कों को एक साथ रखती है, जिससे मिलकर एक पैसा बनता है। तो, सबसे छोटी राशि तक।

वह विधवा का उदाहरण न केवल उसके द्वारा किए गए काम की पुष्टि करने के लिए देता है, बल्कि शास्त्रियों और इन अन्य लोगों, धार्मिक प्रतिष्ठान के खिलाफ़ निर्णय के बयान के रूप में भी देता है। इसलिए एक भावना यह है कि विधवा को मंदिर को पैसे देने वाला अंतिम व्यक्ति होना चाहिए था, क्योंकि मंदिर और धार्मिक नेता को विधवा की देखभाल करनी चाहिए थी। फिर भी विधवा अपना सब कुछ दे रही है और वह जो बयान दे रही है, वह इस भरोसे को दर्शाता है।

यह विश्वास की तस्वीर है, पूर्ण विश्वास की कि उसकी देखभाल की जाएगी। इसलिए, ध्यान रखें कि यह उस प्रश्न से उपजा है जो लेखक ने पूछा था। हमारे पास एक लेखक था जिसने एक प्रश्न पूछा, फिर हमारे पास लेखकों का उल्लेख किया गया।

और मुझे लगता है कि हमें यह रेखा खींचनी चाहिए। शास्त्री ने पूछा था, सबसे बड़ी आज्ञा क्या है? यीशु ने उत्तर दिया था, परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण, शेमा का हवाला देते हुए, पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो। और यहाँ यह विधवा पूर्ण समर्पण दिखा रही है और अपना सब कुछ दे रही है।

और यह पैसा जो दिया गया था, जाहिर है, मंदिर की स्थापना के लिए दिया जाएगा, और अन्य लोगों को इससे लाभ होगा। तो, आप यहाँ भी देख सकते हैं, यह विधवा परमेश्वर के राज्य का एक दृश्य चित्र है। लेकिन साथ ही, यीशु इस बात पर जोर देते हैं कि अन्य लोग अधिशेष में से दे रहे थे।

दूसरे शब्दों में कहें तो यह त्यागपूर्ण दान नहीं था। यह ऐसा दान नहीं था जिससे उन्हें चोट पहुँची हो। यह अतिरिक्त मात्रा में दान था।

और शास्त्रियों के बारे में उन्होंने जो कुछ कहा, उसके संदर्भ में, मुझे लगता है कि इसका तात्पर्य यह है कि बड़ी मात्रा में देने से उन्हें क्षमा करने से सम्मान मिलेगा। जबकि उसने अपनी गरीबी के कारण दिया, उसने सम्मान की इच्छा से नहीं, प्रशंसा की इच्छा से नहीं, बल्कि ईश्वर पर पूर्ण विश्वास और इस विश्वास के साथ दिया कि क्या किया जाएगा और कैसे उसकी रक्षा की जाएगी। यह वहाँ विश्वास का एक बयान है।

तो, अध्याय 12 का यह अंत, जैसा कि अब हम मार्क 13 में प्रवेश करते हैं, अध्याय 12, यह वास्तव में यीशु की अंतिम सार्वजनिक शिक्षा का अंत है। तो, विश्वास और भरोसे के बारे में यह कथन और दूसरों के लिए सब कुछ पूरी तरह से और पूरी तरह से देना, दो सबसे बड़ी आज्ञाओं का यह पुनः अधिनियमन, उन शास्त्रियों से सावधान रहें जो केवल दिखावा करना चाहते हैं, लेकिन फिर भी खुद के लिए प्रशंसा चाहते हैं, कई मामलों में धार्मिक नेताओं के खिलाफ यीशु की शिक्षा और यरूशलेम और सार्वजनिक सेटिंग में उनकी शिक्षा को समाप्त करता है। मुझे लगता है कि यह जानते हुए, फिर विधवा की यह छोटी सी कहानी, मुझे लगता है कि इसे पढ़ना सही है क्योंकि मार्क ने इसे अंतिम शब्द के रूप में चुना, यदि आप चाहें, तो सार्वजनिक शिक्षा के बारे में कि हमें वहाँ कुछ देखना चाहिए, केवल एक प्यारी सी कहानी से अधिक, लेकिन यीशु द्वारा उपयोग की जाने वाली निर्णय और शिष्यत्व की भाषा का एक उपयुक्त सारांश।

ठीक है, चलिए अब आगे बढ़ते हैं। आइए मार्क 13 पर नज़र डालें। जब हम मार्क 13 में आगे बढ़ते हैं: मैं बस थोड़ा सा कहना चाहता हूँ, माफ़ करें, मुझे बस यहाँ नीचे जाना है।

जब हम मार्क 13 के बारे में बात करना शुरू करते हैं, तो मैं कुछ हद तक एस्केटोलॉजिकल प्रवचन के बारे में कहना चाहता हूँ। तो, अब यीशु का यरूशलेम में प्रवेश एक तरह से निष्कर्ष पर पहुँच गया है। वह यरूशलेम गया, वह चला गया, वह चला गया, वह चला गया, और अब वह जा रहा है, और अगली बार जब वह फिर से यरूशलेम में प्रवेश करेगा, तो यह, आप जानते हैं, अंतिम गिरफ्तारी और परीक्षण और सूली पर चढ़ाए जाने के लिए होगा।

और अब तक हम जो देख रहे हैं वह यह है कि इजरायल, खास तौर पर इसके नेता, अपने आदेश का पालन करने में विफल रहे हैं। इसने अवज्ञा को संस्थागत बना दिया है। हमने फल की कमी देखी है।

हमने यीशु को अपरिहार्य न्याय के बारे में बोलते हुए देखा है, खास तौर पर मंदिर के अंत में। हमने मंदिर के शाप के बारे में सुना है, हमने किरायेदारों का दृष्टान्त सुना है, और अब हम अध्याय 13 की ओर बढ़ते हैं। और फिर, मुझे लगता है कि मार्क 13 की हमारी समझ इस संदर्भ में होनी चाहिए, इस संदर्भ में कि यीशु धार्मिक नेतृत्व के खिलाफ इन बयानों, मंदिर के खिलाफ बयानों और अपने न्याय को देने के रूप में यहाँ क्या कर रहे हैं।

दिलचस्प बात यह है कि मार्क 13 मार्क में पाई जाने वाली सबसे लंबी निरंतर शिक्षा है। मार्क 13 से पहले, सबसे लंबी निरंतर शिक्षा लगभग छह वाक्य थी। यहाँ यह 39 है, जो एक बहुत ही समान युगांतिक विषय के इर्द-गिर्द बैठा है, अर्थात् मंदिर, यरूशलेम का विनाश, और मनुष्य के पुत्र का आगमन, साथ ही शायद यीशु के क्रूस पर चढ़ने की ओर भी इशारा करता है।

इस पर थोड़ी देर में और बात करेंगे। बेशक, एक सवाल यह है कि क्या यह सर्वनाश से जुड़ा है? क्या इस प्रवचन को सर्वनाश से जुड़ा भाषण कहना सही है? और निश्चित रूप से इसमें सर्वनाश से जुड़े कुछ अंशों से समानता है जो हम अन्यत्र देखते हैं, जैसे 1 एनोच, 37 से 71, और कुछ अन्य द्वितीय मंदिर और छद्मलेखीय सर्वनाश से जुड़े विधाओं में। और इसे अक्सर मार्क का छोटा सर्वनाश कहा जाता है।

लेकिन जब हम सर्वनाशकारी लेखन के बारे में बात करते हैं, तो हम आमतौर पर किसी प्रकार के स्वर्गीय दर्शन की अपेक्षा करते हैं, अक्सर एक स्वर्गद्वितीय मध्यस्थ। आमतौर पर मानव इतिहास का कोई सारांश नहीं है, अगर आप यहाँ मार्क 13 में कहें, जैसा कि हम उम्मीद करते हैं। इसलिए सर्वनाशकारी शैली में आमतौर पर मानव इतिहास, किसी प्रकार की कल्पना, स्वर्गद्वारों, स्वर्गीय दर्शन का सारांश होता है।

ये वे पहलू हैं जो हमें देखने को मिलते हैं कि बहुत सारे सर्वनाश एक शैली के रूप में समान हैं, और हम इसे नहीं देखते हैं। और इसलिए शायद इसे सर्वनाश संबंधी प्रवचन के रूप में न सोचना बेहतर है, बल्कि इसे युगांत संबंधी प्रवचन के रूप में सोचना चाहिए। यह युगांत संबंधी इस अर्थ में है कि अंतिम दिनों, अंतिम दिनों और आंदोलनों का पूर्वानुमान लगाया जाता है, साथ ही शुरुआत भी।

अंतिम दिनों में मसीह के आगमन के साथ स्थापित होने वाले युग के अर्थ में भी एस्केटोलॉजिकल। और मुझे लगता है कि मार्क 13 में क्रॉस की कुछ छायाएँ हैं। इसमें कुछ ऐसा भी है जो, मुझे लगता है, इस बात की ओर इशारा करता है कि क्या होने वाला है, जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, उसके बारे में और अधिक जानकारी मिलेगी।

और अगर मैं आपको यहाँ एक संरचना के माध्यम से चलने वाला था, तो मैं इन अलग-अलग अंशों के बारे में बात करना चाहता हूँ। ऐसा लगता है कि श्लोक 1 से 4 में यह विचार है, इसलिए मंदिर पर स्थित होना और वहाँ कुछ प्रश्न। फिर 5 से 23 एक आंदोलन प्रतीत होता है।

24 से 27, मनुष्य का पुत्र। 28 से 31, अंजीर का पेड़। और फिर 32 से 37, सतर्कता।

अब जब हम मार्क 13 को देखना शुरू करते हैं, तो यह मार्क के उन अंशों में से एक है जिसकी व्याख्या अलग-अलग है। यीशु यहाँ जिस बारे में बात कर रहे हैं, उसे समझने की एक विस्तृत श्रृंखला है। और मुझे लगता है कि हमें मार्क 13 को किसी भी हद तक निश्चितता के संदर्भ में बहुत सावधानी से आगे बढ़ना चाहिए।

हमें यहाँ अपने विचारों में विनम्र होने की आवश्यकता है क्योंकि अलग-अलग अंश हैं; मार्क 13 में यीशु जो कुछ भी कर रहे हैं, उसके लिए कोई स्पष्ट उत्तर नहीं है जो सभी संभावित विकल्पों को

संतुष्ट करता है। लेकिन हम अन्य बातों पर गौर करते हैं, जैसा कि मैं चाहता हूँ कि हम मार्क 13 के बारे में सोचते समय ध्यान में रखें, कि यह मंदिर के विनाश से संबंधित है। इसलिए, यहाँ जो हुआ और मार्क में यीशु ने जो पहले किया था, उसके बीच संबंध है।

और यह सोचने और सोचने का कारण है कि यीशु ने जो कहा, जो उसने कहा, और मंदिर में जो हुआ उसके बीच क्या संबंध है। आइए इस पर चलते हैं। पहले चार छंदों को देखें।

और जब वह मंदिर से बाहर आया, तो उसके चेलों में से एक ने उससे कहा, देखिये गुरु, कितने शानदार पत्थर और कितनी शानदार इमारतें हैं। और यीशु ने उससे कहा, क्या तू इन बड़ी इमारतों को देखता है? यहाँ एक भी पत्थर दूसरे पर नहीं छोड़ा जाएगा जिसे गिराया न जाएगा। जब वह मंदिर के सामने जैतून के पहाड़ पर बैठा था, तो पतरस, याकूब, यूहन्ना और अन्द्रियास ने उससे अकेले में पूछा, हमें बता कि ये सब बातें कब होंगी और जब ये सब बातें पूरी होने वाली होंगी, तो क्या संकेत होगा? अब मुझे लगता है कि जब हम पद 1 को देखते हैं, तो याद रखें कि यह कोई देहाती मूर्ख नहीं है जो इन बड़ी इमारतों को देखकर चकित हो रहा है।

वे शहर से आते-जाते रहे हैं। वे पहले भी इस यात्रा पर गए होंगे। तो सबसे अधिक संभावना है, फिर से, यह गर्व की बात है।

और यह किसी बुरे तरीके से नहीं, बल्कि एक अद्भुत तरीके से है, इस महान मंदिर में हमारे शहर को देखिए। यह एक शानदार नजारा होता। यह कुछ ऐसा होता जिसे आप बार-बार देखते और फिर भी वही टिप्पणी करते।

वास्तव में, मंदिर की पश्चिमी नींव का हिस्सा जो पत्थर मिला था उसका वजन लगभग 600 टन रहा होगा। मुझे लगता है कि यह सिर्फ इस बात का बयान है कि यह कितना अद्भुत होगा। और मंदिर का यह बयान कि यह कितना विशाल है, श्लोक 2 के लिए मंच तैयार करता है। क्या आप इन महान इमारतों को देखते हैं? यहाँ एक भी पत्थर ऐसा नहीं छोड़ा जाएगा जिसे गिराया न जाए।

मुझे लगता है कि कुछ दिलचस्प बातें हैं जिन्हें हमें देखना चाहिए। सबसे पहले, यह स्पष्ट है कि यह मंदिर के विनाश के बारे में एक बयान है। वे मंदिर पर टिप्पणी कर रहे हैं और उन्होंने अभी कहा है कि ऐसा कोई मंदिर नहीं होगा जिसे गिराया जाए।

और फेंकने की भाषा बहुत सक्रिय भाषा है। इसलिए मुझे लगता है कि यह पुष्टि करता है कि हम मंदिर के अभिशाप होने के खिलाफ यीशु के शब्दों के बारे में बात कर रहे थे, और यह अब स्पष्ट हो रहा है कि क्या सुझाव दिया गया था। लेकिन एक दिलचस्प बात यह भी है, पत्थरों के बीच यह पत्थर।

मैं कुछ समय पहले एक सज्जन से बात कर रहा था और यह तर्क देना चाहता था कि उनका तर्क यह था कि यीशु के शब्द 70 ई. में मंदिर के विनाश का संदर्भ नहीं दे सकते क्योंकि अभी भी ऐसे पत्थर उपलब्ध हैं जिन्हें आप देख सकते हैं। और चूँकि हर पत्थर को हटाया नहीं गया है, इसलिए वहाँ एक रोती हुई दीवार और यह सब है। और मुझे लगता है कि यह सब बात समझ से परे है।

यदि आप 2 शमूएल 17:13 और हागै 2:15 को देखें, तो जब वे मंदिर निर्माण के बारे में बात करते हैं, तो यह पत्थर पर पत्थर है। और इसलिए, यीशु यहाँ जिस भाषा का उपयोग कर रहे हैं कि कैसे एक पत्थर, एक पत्थर दूसरे पर नहीं छोड़ा जाएगा, वह निर्माण भाषा का बिल्कुल उलट है। निर्माण भाषा एक पत्थर पर दूसरा निर्माण करना और अब एक को हटाना है।

तो, ऐसा नहीं है कि अगर एक पत्थर दूसरे पत्थर से जुड़ा हुआ है तो ऐसा नहीं हो सकता; किसी तरह, यह पूरा नहीं हुआ है क्योंकि यह भाषा की आलंकारिक प्रकृति नहीं है। यह उस चीज़ को नष्ट करने के बारे में बात कर रहा है जिसे आप बनाते हैं। यह भी ध्यान दें कि जब तक आप पश्चाताप नहीं करते तब तक भाषा की कमी है।

जब आप यरूशलेम और मंदिर और भविष्यवक्ताओं की विध्वंसकारी भाषा देखते हैं, तो यह अक्सर इस बात से जुड़ी होती है कि जब तक वे अपने रास्ते से नहीं हटते, जब तक वे पश्चाताप नहीं करते, जब तक वे नहीं सुनते, तब तक मैं उनकी बात सुनूंगा। आमतौर पर ऐसा होता था, अगर आप चाहें तो कुछ बदलने का यह अवसर होता था। यहाँ ऐसा नहीं है।

तो, दूसरे शब्दों में, यह चेतावनी वाला बयान नहीं है। यह इस बात का बयान नहीं है कि जब तक वे पश्चाताप नहीं करेंगे और मेरे पास नहीं आएंगे, तब तक यह सब होगा। यह निर्णय का बयान है कि निर्णय आ चुका है।

और अब बस समय बीतने का इंतज़ार है जब तक कि न्याय प्रकट न हो जाए। मंदिर ढहने वाला है। हम यहाँ दिलचस्प चीज़ें देखते हैं।

यीशु, जब अपना वक्तव्य देते हैं, तो वे जैतून के पहाड़ पर बैठते हैं। अब जैतून का पहाड़ पुराने नियम में एक तटस्थ स्थान नहीं है। यह सिर्फ़ भौगोलिक दृष्टि से हो सकता है जहाँ वे थे, लेकिन हम यह भी जानते हैं कि जैतून के पहाड़ के साथ, आपके पास, यह वह जगह थी जहाँ कुछ निर्णय था, यह इज़ेकील के साथ, जैतून के पहाड़ के साथ, यह युगांतशास्त्र के साथ संबंध था, और इसलिए यहाँ भी कुछ समानता है।

तो, वह पढ़ाने के लिए बैठता है, और बड़े चार वहाँ होते हैं। हमारे पास हमारे तीन हैं, हम हमेशा करते हैं, लेकिन एंड्रयू, वह इस एक पर आता है, इसलिए एंड्रयू यहाँ है, और वह उन चारों के साथ बैठता है जिन्होंने उससे निजी तौर पर पूछा था, ये चीज़ें कब होंगी? जब ये सभी चीज़ें पूरी होने वाली होंगी तो क्या संकेत होगा? अब मुझे लगता है कि यहाँ जो पूछा जा रहा है वह इस धारणा को प्रकट करता है कि मंदिर का विनाश उनके दिमाग में सभी चीज़ों के अंत का पर्याय है, कि वे उन दोनों को एक साथ जोड़ रहे हैं। वास्तव में, अगर हम मैथ्यू 24 को देखें, तो यह और भी स्पष्ट हो जाता है।

मत्ती 24:3, जो मत्ती में एक ही प्रवचन है, को और भी स्पष्ट किया गया है। इसलिए, मुझे लगता है कि जब वे इन चीज़ों के बारे में ये सवाल पूछते हैं, जो कि बहुवचन में है, तो सिर्फ़ यह बात नहीं कि अगर यह बात थी, तो यह बात कब होगी? यह मंदिर के बारे में उन्होंने जो कहा, उसका संदर्भ होता, लेकिन इसके बजाय, वे पूछ रहे हैं कि ये चीज़ें कब होंगी? मुझे लगता है, मेरे हिसाब से, यह

दर्शाता है कि वे संभवतः यह समझ रहे हैं कि विनाश, जो उन्होंने अभी मंदिर के बारे में कहा है, सभी चीजों के अंत के साथ होगा, या महान आगमन, उनके आगमन का संकेत, अगर आप चाहें, तो, वे इसे एक विशेष घटना के रूप में देख रहे हैं। और यह, ज़ाहिर है, समझ में आता है।

मंदिर का विनाश एक स्कोलॉजिकल घटना कैसे हो सकती है? लेकिन मेरा मानना है कि यह उनकी गलती है। उनकी गलती यह है कि वे मानते हैं कि मंदिर का विनाश और सभी चीजों का अंत एक ही बात है, और मुझे लगता है कि यीशु ने अपने उत्तर में उस गलती को उजागर करना शुरू कर दिया है। आइए इसे पद 5 में उठाते हैं। इसलिए, पद 4 में, वे एक संकेत के लिए पूछते हैं जब ये चीजें पूरी होने वाली होती हैं।

पद 5 से 8 तक, और यीशु ने उनसे कहना शुरू किया, देखो कोई तुम्हें भरमा न ले। बहुत से लोग मेरे नाम से आएंगे, और कहेंगे, मैं वही हूँ, और बहुतों को भरमा देंगे। और जब तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनो, तो घबरा न जाना।

यह अवश्य होगा, लेकिन अंत अभी नहीं हुआ है। क्योंकि एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के विरुद्ध और एक राज्य दूसरे राज्य के विरुद्ध उठ खड़ा होगा। जगह-जगह भूकंप आएंगे।

अकाल पड़ेंगे। ये तो प्रसव पीड़ा की शुरुआत है। इसलिए, ध्यान दें कि वे संकेत मांग रहे हैं, और मैं जो तर्क दे रहा हूँ वह यह है कि वे, मुझे लगता है, हर चीज के अंत का संकेत मांग रहे हैं, जैसे कि युग का अंत कब होने वाला है।

और यीशु सबसे पहले इस बात का उत्तर देते हैं कि क्या कोई संकेत नहीं है। यही उत्तर 5 से 8 में है। वह कई वस्तुओं को सूचीबद्ध करना शुरू करता है, लेकिन वह उन्हें बताता है कि ये संकेत नहीं हैं कि अंत तुरंत होने वाला है, बल्कि ये प्रसव पीड़ा है। और यह भी ध्यान दें, जब वह इस पर चर्चा कर रहा है, तो अब और जब अंत होगा, के बीच समय बीतने का एहसास होता है।

समय बीतने के साथ ही राष्ट्रों के विरुद्ध राष्ट्र, राज्य के विरुद्ध राज्य, विभिन्न स्थानों पर भूकंप और अकाल पड़ेंगे। ये तो बस शुरुआत है। वह कहता है कि मेरे नाम पर बहुत से लोग आएंगे जो लोगों को गुमराह करेंगे।

युद्ध होंगे और युद्ध की अफ़वाहें भी। यह होना ही चाहिए, लेकिन अंत अभी नहीं हुआ है। यह सब समय बीतने का संकेत देता है, न कि किसी तरह की तत्काल घटना का।

और इसलिए, मुझे लगता है कि वह अपने उत्तर में यीशु को जिस श्रेणी में रख रहा है, वह यह है कि वह सबसे पहले कहता है, देखो कि तुम धोखा न खाओ, देखो कि कोई तुम्हें गुमराह न करे, और फिर घटनाओं की एक श्रृंखला सूचीबद्ध करता है जो दर्दनाक घटनाएँ होंगी जिनका लोग अनुभव करने जा रहे हैं। युद्ध, युद्ध की अफ़वाहें, अकाल, भूकंप, ये राष्ट्र राष्ट्रों के विरुद्ध जा रहे हैं, राज्य के विरुद्ध राज्य। ऐसी चीजें जो ऐसा माहौल बनाएँगी जिससे धोखा खाना आसान हो, जिससे कोई भी उम्मीद ढूँढ़ना आसान हो जाए, और ऐसे लोग होंगे जो या तो मसीहा होने का दावा करेंगे, मुझे लगता है कि यही है, आप जानते हैं, या शायद यीशु के नाम पर आ रहे हैं, जिसे किसी भी

तरह से संदर्भित किया जा सकता है, वह कथन, कई लोग मेरे नाम पर आएंगे और कहेंगे कि मैं वही हूँ।

वह कह रहे हैं कि जब आप ये सब देखेंगे, तो आप सोचेंगे कि यह अंत होगा। देखिए हालात कितने खराब हैं। वह कह रहे हैं कि धोखा मत खाइए।

मैंने अभी जो कुछ कहा, वह अंत का संकेत नहीं है। ये ज़रूरी हैं। ये सिर्फ़ प्रसव पीड़ा है।

वे अंत नहीं हैं, और मुझे लगता है कि यह पहचानना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बहुत आसान है, मुझे लगता है, जैसे-जैसे हम इस पर काम करते हैं, ओह ये युग के अंत के संकेत होने चाहिए, क्योंकि यही तो शिष्यों ने मांगा था, सिवाय इसके कि वास्तव में यीशु जो कह रहे हैं वह बिल्कुल विपरीत है। ये संकेत नहीं हैं। ये प्रसव पीड़ा है।

वे शुरूआत हैं, लेकिन इस समय सही या दहलीज नहीं हैं। हम 9 से 13 तक काम करना जारी रखते हैं। मुझे लगता है कि यह इसे और भी मजबूत बनाता है।

वह फिर से शुरू करता है, लेकिन सावधान रहो क्योंकि वे तुम्हें परिषदों में सौंप देंगे और तुम आराधनालयों में पीटे जाओगे और तुम मेरे लिए राज्यपालों और राजाओं के सामने खड़े होगे ताकि उनके सामने गवाही दे सको और सुसमाचार पहले सभी राष्ट्रों में घोषित किया जाना चाहिए और जब वे तुम्हें एक परीक्षण में ले जाएं और तुम्हें सौंप दें तो पहले से चिंता न करें कि तुम क्या कहोगे लेकिन उस समय जो कुछ भी तुम्हें दिया जाए उसे कहो क्योंकि तुम बोलने वाले नहीं हो लेकिन पवित्र आत्मा और भाई भाई को मौत के हवाले कर देंगे और पिता अपने बच्चे को और बच्चे फिर से जीवित होंगे माता-पिता और उन्हें मौत के घाट उतार देंगे और तुम मेरे नाम के कारण सभी से घृणा करोगे लेकिन जो अंत तक धीरज धरेगा वह बच जाएगा। यहाँ फिर से ध्यान दें, समय बीतने के साथ, उत्पीड़न है, आराधनालयों से निष्कासन है। मेरा मतलब है कि इसके लिए समय बीतने की आवश्यकता होगी जब चर्च आराधनालयों में मिलना शुरू कर देगा और इससे अलग होना शुरू हो जाएगा।

यह निश्चित रूप से पूर्वानुमान लगाता है कि क्या होगा, लेकिन इसमें एक व्यापक भावना है। इसमें दृढ़ता की भाषा है, जिसे आप जानते हैं कि इसमें दानिय्येल 12 का विचार है, इन राष्ट्रों का आपके खिलाफ उठना यह मजबूत प्रेरणा है कि सुसमाचार की घोषणा पहले सभी राष्ट्रों में की जानी चाहिए। इसके लिए समय बीतने की आवश्यकता है।

अब मुझे लगता है कि कुछ समूह इसे गलत तरीके से समझते हैं कि जब हम अंततः सभी चीजों के अंत के आगमन की भविष्यवाणी कर सकते हैं, जब सुसमाचार सभी राष्ट्रों में चला गया है, तो ऐसा किया जाता है जैसे कि इसके साथ किसी प्रकार का नियंत्रण या पूर्वानुमान भी जुड़ा हो सकता है या यह कि राष्ट्रों में जाना सब कुछ समाप्त करने का एक तरीका है, यहाँ मिशनरी कथन नहीं है। जो प्रस्तुत किया जा रहा है वह इस घटना की एक तस्वीर है। मेरा मानना है कि यीशु इस समय अवधि, उसके प्रस्थान और उसके दूसरे आगमन के बीच की समय अवधि को रेखांकित कर रहे हैं, कि यह समय अवधि दो पहलुओं द्वारा चिह्नित होने जा रही है।

एक है दुख, अकाल, भूकंप, युद्ध, यह अनोखी पीड़ा और उत्पीड़न, मेरे नाम के कारण तुमसे घृणा करना, तुम्हें भाई के विरुद्ध भाई बना देना, कि वहाँ पीड़ा और उत्पीड़न होगा जो यीशु को यीशु के प्रस्थान से लेकर उसके आगमन, उसके दूसरे आगमन और सभी राष्ट्रों में सुसमाचार के जाने तक के समय की अवधि को दर्शाता है। कि इस समय अवधि को उत्पीड़न और मिशन, सुसमाचार के जाने और पीड़ा से चिह्नित किया जाना चाहिए। और मुझे लगता है कि यहाँ एक सुंदर विडंबना है कि जिस तरह से भगवान ने इसे डिज़ाइन किया है वह इसलिए है क्योंकि हम, चर्च, राष्ट्रों में सुसमाचार लाते हैं; राष्ट्र चर्च से नफरत करते हैं क्योंकि वे यीशु को अस्वीकार करते हैं; वे सुसमाचार को अस्वीकार करते हैं।

फिर भी चर्च लगभग ऐसा करने की कोशिश नहीं कर रहा है, मैं इस बारे में पलटने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ, लेकिन मिशन लगभग उत्पीड़ितों को उत्पीड़कों के पास जाने के लिए उकसाता है ताकि वे सताए गए लोगों का हिस्सा बन सकें। आप जानते हैं कि हर चीज़ में यह उलटफेर होता है। आप जानते हैं कि सुसमाचार के बारे में यह कथन सभी राष्ट्रों तक जाना चाहिए, मुझे लगता है कि यह एक उम्मीद भरा कथन भी है, ताकि चाहे स्थिति कितनी भी दमनकारी क्यों न लगे, चाहे वह प्राकृतिक पीड़ा या सरकारी उत्पीड़न के कारण हो, यीशु इस बात की पुष्टि कर रहे हैं कि सुसमाचार सभी राष्ट्रों तक जाएगा।

इस समय अवधि की पीड़ा, छंद पांच से आठ, उत्पीड़न सुसमाचार की प्रगति को नहीं रोकता है। आप जानते हैं, मुझे लगता है कि यहाँ कुछ दिलचस्प निर्गमन संकेत हैं; इस बारे में चिंता न करें कि आप क्या कहेंगे। मूसा के बारे में न सोचना मुश्किल है और मूसा इस बात को लेकर चिंतित था कि वह क्या कहेगा और परमेश्वर ने पुष्टि की कि उसे उसके शब्द दिए जाएँगे।

तो यह एक तरह का समान वादा है। लेकिन यह पैटर्न है, ये प्रसव पीड़ाएँ। मुझे लगता है कि ये प्रसव पीड़ाएँ हैं, सुसमाचार का प्रचार हो रहा है, और परिणामस्वरूप उत्पीड़न हो रहा है।

और अंत तक धीरज धरने का मतलब यह नहीं है कि जो लोग इस समय अवधि के अंत तक धीरज धरेंगे, वे बच जाएँगे, बल्कि इसका मतलब है कि जो लोग इस समय की पूरी अवधि तक धीरज धरेंगे और अपने विश्वास में डगमगाएँगे नहीं। यह धीरज और उत्पीड़न सच्चे विश्वास का संकेत है। अब हम इसे 14 से 23 तक फिर से देखते हैं।

तो, हम इन बड़े प्रसव पीड़ाओं के बारे में बात कर रहे हैं, यह समय अवधि जो अंत के संकेत नहीं हैं जैसा कि मैं इसे पढ़ रहा हूँ। लेकिन जब आप उजाड़ने वाली घृणित वस्तु को वहाँ खड़े देखें जहाँ उसे नहीं होना चाहिए, तो पाठक को समझना चाहिए। जो लोग यहूदिया में हैं वे पहाड़ों पर भाग जाएँ।

जो घर में हो वह चुपचाप खड़ा रहे, और न नीचे जाए, और न घर में घुसकर कुछ ले आए। जो खेत में हो वह अपना कपड़ा लेने के लिए पीछे न लौटे। और जो स्त्रियाँ गर्भवती हों, और जो उन दिनों में दूध पिला रही हों, उनके लिए प्रार्थना है कि यह सब सर्दियों में न हो।

क्योंकि उन दिनों में ऐसा क्लेश होगा, जैसा सृष्टि के आरम्भ से लेकर अब तक न हुआ, और न कभी होगा। और यदि प्रभु ने उन दिनों को न घटाया होता, तो कोई भी मनुष्य न बचता। परन्तु अपने चुने हुओं के कारण जिन्हें उसने चुना है, उन दिनों को घटाया।

उस समय यदि कोई तुम से कहे, कि देखो, मसीह यहाँ है, या देखो, मसीह वहाँ है, तो प्रतीति न करना। क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और भरमाने के लिये चिह्न और अद्भुत काम दिखाएँगे। यदि हो सके, तो चुने हुए लोग सावधान रहें।

मैंने आपको ये सारी बातें पहले ही बता दी हैं। आप जानते हैं, जिस तरह से मैं 14-23 पर काम कर रहा हूँ, यह बहुत ही विशिष्ट लगता है। आप जानते हैं, जब हमने श्लोक 5-13 को देखा, तो वे ज्यादातर सामान्य बातें थीं।

युद्ध, युद्ध की अफ़वाहें, भूकंप, दुख, राष्ट्र बनाम राष्ट्र, राज्य बनाम राज्य। तुम शासकों, परिषदों, राज्यपालों के सामने जाओगे। सुसमाचार सभी राष्ट्रों में जाएगा।

लेकिन यहाँ बहुत विशिष्टता है, है न? आप देखिए, लेकिन जब आप उजाड़ने की घृणित वस्तु को देखते हैं, तो यह एक विशिष्ट घटना प्रतीत होती है। अब, उजाड़ने की घृणित वस्तु का विचार दानियेल 9, 11, 12, 1 मैकाबीस, अध्याय 1 से उत्पन्न होता है। और उजाड़ने की घृणित वस्तु वह अवधारणा थी जो विकसित हुई जहाँ इसमें यरूशलेम मंदिर, एक वेदी, और बलि अनुष्ठान शामिल होगा, जहाँ कोई चीज़ एक बुतपरस्त वस्तु है, या मंदिर में बलि रखी जाती है, मंदिर की गतिविधि को बुतपरस्त गतिविधि बनाने की कोशिश की जाती है। इसलिए, यह आमतौर पर मंदिर के आसपास केंद्रित होता है।

तो, उजाड़ के इस घृणित विचार में भी मंदिर के अभी भी वहाँ होने का विचार है। यीशु ने अभी कहा था कि मंदिर नष्ट हो जाएगा, लेकिन ऐसा लगता है कि यह मंदिर के वहाँ होने के बारे में बात कर रहा है। और वहाँ एक व्यक्ति खड़ा है, न कि कोई वस्तु, जैसा कि यीशु ने मार्क में कहा है, कि जब आप उजाड़ के घृणित विचार को देखते हैं, तो आप समझ रहे हैं कि उसे कहाँ नहीं होना चाहिए।

अब, यह कोई वास्तविक व्यक्ति हो सकता है जो कोई कार्य कर रहा हो, यह उस व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करने वाला एक मानक हो सकता है। फिर से ध्यान दें कि भाषा कितनी विशिष्ट है कि कैसे आंदोलन त्वरित होना चाहिए, कि आपको तुरंत छोड़ देना चाहिए, जाना चाहिए, आप जानते हैं, जो लोग यहूदिया में हैं उन्हें पहाड़ों पर भाग जाना चाहिए। यह बहुत विशिष्ट है।

मुझे उम्मीद है कि यह सर्दियों में नहीं होगा, और मुझे उम्मीद है कि आप उन दिनों में स्तनपान नहीं करा रहे होंगे। और मुझे लगता है कि यहाँ जो कुछ हो रहा है वह एक बहुत ही खास प्रसव पीड़ा है, जिसके बारे में यीशु सामान्य रूप से प्रसव पीड़ा और पीड़ा के बारे में बात करते रहे हैं, लेकिन यहाँ उन्होंने एक बहुत ही खास बात बताई है। मुझे लगता है कि यह यरूशलेम की लूट है।

यह मंदिर का विनाश है। यह तब होगा जब रोम आएगा और इसे समतल करेगा, और वे मानक लाएंगे; वे ऐसे काम करेंगे जो उजाड़ने की घृणित घटना होगी। और मुझे लगता है कि वह यहाँ है, वह शिष्यों से बात कर रहा है और उन्हें कुछ ऐसा बता रहा है जो बस कुछ ही दशकों में होने वाला है।

और बहुत स्पष्ट रूप से बता रहा हूँ कि जब आप देखते हैं कि यह घटित होना शुरू हो गया है, तो लोगों को तुरंत भाग जाना चाहिए। आप जानते हैं, भाषा, यह विचार कि यह अंतिम घटना है, मुझे लगता है, यह कथन थोड़ा मुश्किल लगता है कि उन दिनों में, ऐसा क्लेश होगा जो सृष्टि के आरंभ से लेकर अब तक नहीं हुआ है और कभी नहीं होगा। मेरा मतलब है, वे कभी भी इसका हिस्सा नहीं होंगे, यह स्पष्ट प्रतीत होता है यदि यह केवल कुछ ऐसा है जो सब कुछ के अंत के क्षण में होता है।

और वास्तव में, ऐसा कभी नहीं हुआ और न ही कभी होगा, यह असामान्य अतिशयोक्तिपूर्ण वाक्यांश नहीं है। आप जानते हैं, आप देखते हैं, आप निर्गमन 9 और 11 और व्यवस्थाविवरण 4, दानियेल 12 और योएल 2 में समान वाक्यांश देखते हैं। हालाँकि यह बहुत ही समग्र है, मैं इसे कम करने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। वास्तव में, हम यरूशलेम की लूट और मंदिर को जलाने के बारे में ऐतिहासिक रूप से जो जानते हैं, वह यह है कि मृत्यु और विनाश के प्रतिशत के संदर्भ में महत्वपूर्ण, लगभग बेजोड़ था।

और इसलिए, मुझे लगता है कि इसमें कुछ वास्तविकता है। और यहां तक कि दिनों का छोटा होना भी, मुझे लगता है, रोम के आगमन के उस क्षण को दर्शाता है जिसे परमेश्वर ने निर्धारित किया था कि कब समाप्त होगा, और वह चुने हुए लोगों के प्रति दया के कारण इसे रोकता है, जो मुझे लगता है कि यहाँ संभवतः यीशु के यहूदी अनुयायियों का संदर्भ है जो यरूशलेम पर होने वाले इस निर्णय में फंस गए हैं। तो, यह वह विचार है जो यीशु ने अभी कहा था: मंदिर को नष्ट कर दिया जाएगा।

और हम निश्चित रूप से पुराने नियम के चित्र से जानते हैं कि परमेश्वर अक्सर यरूशलेम और इस्राएल पर न्याय के लिए अन्य राष्ट्रों का उपयोग करता है। और यही यहाँ घटित हो रहा है। उसने पहले ही घोषणा कर दी है कि वह न्याय आने वाला है।

और यहाँ वह बहुत ही विशिष्ट निर्देश दे रहा है कि यह कब पता चले कि यह आ रहा है और इसकी गंभीरता क्या है। और ऐसा करने से, यरूशलेम के ईसाई बहुत गंभीर रूप से इसकी चपेट में आ सकते हैं। और यह एक निर्देश है जो उसने शिष्यों को दिया है कि फिर यरूशलेम चर्च और यहूदिया के लोगों को जारी रखें कि जब आप इसे देखें तो भाग जाएँ और भाग जाएँ।

और इसलिए, मुझे लगता है कि हमें इस अंश 9 से 13 को अंत के संकेत के रूप में नहीं पढ़ना चाहिए, बल्कि एक विशेष प्रसव पीड़ा के रूप में देखना चाहिए कि यह उजाड़ का धिनौना काम अब इस बात की विशेषता है कि अंत आने वाला है, बल्कि यह न्याय, विधान, अनुग्रह, धीरज को दर्शाता है, साथ ही हम कुछ दशकों में इस बात का सबूत देंगे कि यीशु कितने महान भविष्यवक्ता हैं कि उन्होंने वास्तव में इसकी भविष्यवाणी की थी। मैं 24 से 27 को देखना जारी

रखना चाहता हूँ। लेकिन उन दिनों में, उस क्लेश के बाद, सूरज अंधकारमय हो जाएगा और चाँद अपनी रोशनी नहीं देगा, और तारे आकाश से गिरने लगेंगे, और आकाश की शक्तियाँ हिल जाएँगी।

और फिर वे मनुष्य के पुत्र को बड़ी शक्ति और महिमा के साथ बादलों में आते देखेंगे। और फिर वह स्वर्गदूतों को भेजेगा और अपने चुने हुए लोगों को चारों दिशाओं से और पृथ्वी के छोर से स्वर्ग के छोर तक इकट्ठा करेगा। और उन दिनों का इस्तेमाल अक्सर ईश्वरीय दर्शन या ईश्वरीय हस्तक्षेप, न्याय की भाषा का वर्णन करने के लिए किया जाता है।

हम देखते हैं कि यिर्मयाह 3, 5, 31, योएल 2, जकर्याह 8. तो, मुझे लगता है कि अब आखिरकार यीशु इस सवाल का जवाब दे रहे हैं कि जब ये सारी बातें होंगी तो क्या संकेत होंगे। तो, मेरा मानना है कि शिष्यों के सवाल ने मंदिर के विनाश और अंत के संकेतों को गलत तरीके से मिला दिया। यीशु सबसे पहले इस बारे में बात करना शुरू करते हैं कि क्या संकेत नहीं है, जिसमें यह भी शामिल है कि यरूशलेम में मंदिर का विनाश एक अनूठा क्लेश नहीं है।

तो, उन्होंने कहा, ठीक है, मैं आपके इस सवाल का जवाब देने जा रहा हूँ कि यरूशलेम की लूट कब होगी, यह बताकर कि जब उजाड़ने वाली घृणित घटना होगी, तो आप क्या देख सकते हैं। लेकिन उस समय अवधि के भीतर उसे ढूँढ़ें जो संकेत नहीं है। मेरा मानना है कि अब वह इस सवाल का जवाब प्रस्तुत करता है कि चीजों के अंत के संकेत क्या हैं।

और मुझे लगता है कि विडंबना यह है कि चीजों के अंत का संकेत, यीशु के अपने राज्य में आने का संकेत उसका आना है। मेरा मतलब है, यह इस तरह से है कि आप कैसे जानते हैं कि अंत कब आ गया है? ऐसा इसलिए है क्योंकि यह यहाँ है, इसलिए आपको किसी भी ऐसी चीज से धोखा नहीं खाना चाहिए जो इसके लिए सौंपी जा सकती है। मेरा मतलब है, यह भाषा इस तरह से काम करती है, कि अगर आप इस बात के संकेत खोज रहे हैं कि अंत निकट है, तो आप खुद को विनाश के लिए, मेरा मतलब है, धोखे के लिए खुला छोड़ रहे हैं।

बल्कि यीशु जो कह रहे हैं वह यह है कि जब अंत आ जाएगा, तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि अंत आ गया है। वह ब्रह्मांडीय भाषा का उपयोग करता है, वह भाषा जो हम यशायाह 13 और 34, यहजकेल 32 और योएल 2, और आमोस 8 में देखते हैं, वह भाषा जो यशायाह 13 में बेबीलोन, यरूशलेम और यिर्मयाह 4, फिरौन की सेना, और यहजकेल और सामरिया और आमोस के विनाश का वर्णन करने के लिए उपयोग की जाती है। और इसलिए, आपके पास यह चित्रण है, और फिर वे देखेंगे जब सभी सूर्य, जब सब कुछ अंधेरा हो जाएगा और तारे गिर रहे होंगे, तब वे मनुष्य के सूर्य को बड़ी शक्ति के साथ बादलों में आते देखेंगे।

और इसलिए वह जो प्रस्तुत कर रहा है वह प्रभु का दिन है, चीजों का अंत, सृष्टि का ताना-बाना अब इसे एक साथ नहीं रख सकता, संतों का महान जमावड़ा। ध्यान दें कि दुनिया भर से इस जमावड़े में भी एक मार्ग है; प्रकाश के इस जमावड़े में समय का एक मार्ग है, लेकिन विचार यह है कि कोई भी विश्वासी छूट न जाए। और चारों कोनों और चारों दिशाओं से यह महान जमावड़ा सभी तरह से एक साथ इकट्ठा हुआ है।

मुझे लगता है कि यह दिलचस्प तरह का क्रॉस चित्र है, अगर यह प्रभु के महान दिन का चित्र है, मनुष्य के सूर्य का वापस लौटना और न्याय का घटित होना और कैसे सृष्टि स्वयं लड़खड़ाने लगती है, तो हम क्रॉस पर यीशु के क्रूस पर चढ़ने के समय जो कुछ हुआ, उसका थोड़ा सा हिस्सा देखते हैं। हम इसे थोड़ी देर में उठाएंगे, लेकिन मैं यह सुनिश्चित करना चाहता था कि क्रॉस ओवरले का एक संकेत हो। और फिर यीशु अंजीर के पेड़ से समाप्त होता है, उसका सबक सीखता है: जैसे ही इसकी शाखा कोमल हो जाती है और पत्ते निकलने लगते हैं, आप जानते हैं कि गर्मी करीब है।

इसी प्रकार जब तुम यह सब घटित होते देखो, तो जान लो कि वह द्वार ही पर निकट है। मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी। आकाश और पृथ्वी मिट जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न मिटेंगी।

परन्तु उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत, न पुत्र, परन्तु केवल पिता। सावधान रहो और जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आएगा। यह उस मनुष्य के समान है जो यात्रा पर जाते समय घर से निकलकर अपने दासों को उनका काम सौंप देता है, और द्वारपाल को जागते रहने की आज्ञा देता है।

इसलिए, जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का मालिक शाम को या आधी रात को या मुर्गे के बाँग देने या सुबह को कब आएगा, कहीं ऐसा न हो कि वह अचानक आकर तुम्हें सोता हुआ पा ले। और जो मैं तुमसे कहता हूँ, वही सब से कहता हूँ, जागते रहो। यहाँ हम जिस आखिरी बात पर गौर करते हैं, वह यीशु की शिक्षा है।

एक बात यह है कि, आप जानते हैं, जब आप इन चीजों को देखते हैं जिनका उन्होंने अभी वर्णन किया है, तो जान लें कि अंत निकट है, लेकिन यह भी जुड़ा हुआ है, लेकिन यह मत सोचिए कि आप समय जानते हैं। मेरा मतलब है, धोखा हमेशा यह सोचना है कि आप मनुष्य के पुत्र के आगमन का समय जानते हैं। ऐसा मत सोचिए, वह कहते हैं, ऐसा मत सोचिए कि आप समय जानते हैं।

इसलिए, आप जो कुछ भी देखते हैं, वह समय का पूर्वानुमान नहीं लगा सकता। क्योंकि निर्देश नहीं, आप जानते हैं, आदेश नहीं सोचता कि आप जानते हैं। और आपके पास यह महान कथन भी है, बेटा भी नहीं जानता, बल्कि केवल पिता जानता है।

और इस पर बहुत बहस है। क्या यह कुछ ऐसा है जो यीशु को कुछ समय के लिए नहीं पता था, लेकिन अब वह जानता है? क्या यह कुछ ऐसा है जो केवल पिता के ज्ञान में है, फिर भी किसी तरह परमेश्वर पुत्र के ज्ञान में नहीं है? क्या यह इस तथ्य का संकेत है कि यीशु, परमेश्वर पुत्र, ने देहधारण करने के बाद आत्मसमर्पण कर दिया था? बहुत सारी चर्चाएँ हैं, लेकिन मुझे लगता है कि हमारे उद्देश्यों के लिए, जहाँ हम इसे देखना चाहते हैं, यह ध्यान देने योग्य है कि यह मूर्खता का तर्क है। इसमें, यह है कि यदि परमेश्वर पुत्र स्वयं अपने भेजे जाने के समय को नहीं जानता है; आप में से किसी के लिए, हममें से किसी के लिए, किसी भी शिष्य के लिए यह पूछना कितना मूर्खतापूर्ण है कि अंत कब आ रहा है, और इसके संकेत क्या होंगे।

इसके बजाय, हमें सावधान रहना है, और जागते रहना है, और तैयार रहना है, ताकि हमें यह निश्चितता पता हो कि वह वापस आएगा। यही बात यीशु ने शिष्यों से कही थी, कि वह वापस आएगा, कि एक अंत होगा और एक बड़ी सभा होगी। लेकिन फिर यह कब होगा, इस पर सवाल उठाना गलत है।

मुझे लगता है कि यह मार्क 13 की तरह ही है, कि यीशु मंदिर के बारे में इस सवाल का जवाब देने के बीच आगे-पीछे जाता है, उसके आने के बीच के समय के इस सवाल के साथ, उसके आने के समय के जवाब के भीतर, उसके लौटने के संकेत क्या हैं, और उसके लौटने के संकेत तब होते हैं जब सृष्टि स्वयं नष्ट हो जाती है, और चुने हुए लोग इकट्ठे हो जाते हैं। आप जानते हैं, यहाँ, मार्क 13 में, और निश्चित रूप से वाचा के उन्नत प्रवचनों में, सोचने के लिए बहुत कुछ है, लेकिन शायद हम, और सबसे अच्छा होगा कि यीशु अपने शिष्यों से जो कहते हैं, उसे छोड़ दें, कि सुसमाचार राष्ट्रों तक जाना चाहिए। दुख हमें आश्चर्यचकित नहीं करता है, लेकिन आशा है कि वह वापस आएगा और हम सभी को इकट्ठा करेगा।

हम अगली बार मार्क 14 को उठाएंगे।

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स द्वारा मार्क के सुसमाचार पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 20, मार्क 12:38-13:36, गरीब विधवा, एस्केटोलॉजिकल प्रवचन है।